संग्रहीत तथा रचित अप्राप्य गीत

पं० भातखण्डे द्वारा

संग्रहीत तथा रचित अप्राप्य गीत

संग्रहीत गीत तालिका

क्रमांक	राग	आद्याक्षर	ताल	प्राप्ति-स्थान
१.	यमन	शाहा जे कर्म	एकताल	आशिकअली
२.	मलुहा केदार	कैसे उजियारी	तिलवाड़ा	आशिकअली
३.	गुणकली	मोहे लेत रस	तिलवाड़ा	मुहम्मदअली
४.	सूहा	आज रे बधावरा	तिलवाड़ा	(?)
५.	शहाना	सासाधधनिपमप	त्रिताल	(?)
६.	जौनपुरी	मलिया झूम रहे	एकताल	आशिकअली
७.	जौनपुरी	मलिया झूम रहे	रूपक	आशिकअली
८.	मालकंस	काल की चिरैया	तिलवाड़ा	आशिकअली
९.	तोड़ी	सगुन बिचारो रे	तिलवाड़ा	आशिकअली
१०.	गूजरी तोड़ी	एरी माई आज	तिलवाड़ा	हैदरखाँ
११.	गूजरी तोड़ी	समझ मन गोरख धंधा	त्रिताल	मुहम्मदअली
१२.	कालिंगड़ा	हरी आला बनावन	झपताल	(?)
१३.	बहार	आयो है बसंत	झपताल	(?)

श्री गणपति बुवा भिलवड़ीकर

स्व० पं० दत्तात्रेय केशव जोशी

स्व० उस्ताद नज़ीर खाँ मुरादाबाद वाले

स्व० श्री एकनाथ उर्फ माऊ पंडित

आदर्श गायक

स्व० उस्ताद जाकिरुद्दीन खाँ एवं अलावन्दे खाँ बन्धुद्वय

प्रिय गायक

स्व० उस्ताद फैयाज हुसेन खाँ

पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे द्वारा संग्रहीत गीतों के कुछ नमूने स्व० श्री शंकरराव कारनाड़ के पत्र-संग्रह से यहाँ पर उद्धृत किये हैं। मूल पत्रादि पं० भातखण्डे की हस्तलिपि में हैं। गीतों के साथ दी हुई टिप्पणियाँ भाषांतरित की हैं। गीत-संग्रह की यह बहुत बड़ी फाइल प्रो० बी० आर० देवधर ने संगीत नाटक अकादमी, देहली तक पहुँचाकर उसे सुरक्षित किया है। नया गीत प्राप्त होते ही उसकी अनेक प्रतियाँ बनाकर अपने मूल स्वरूप में शिष्य-मित्रों को भेजना पं० भातखण्डे की परिपाटी बन चुकी थी। गीत क्रमांक १२ और १३ डॉ० श्री० ना० रातांजनकर ने उपलब्ध किये हैं। सम्भवतः ऐसे अनेक गीत आज भी जहाँ-तहाँ बिखरे पड़े होंगे। उनके संकलन का प्रयत्न राष्ट्रीय भावना से होना चाहिये। प्रत्येक गीत भले ही नया अथवा अप्रकाशित न हो, परन्तु उसका मूल स्वरूप, प्राप्ति-स्थान आदि की दृष्टि से जिज्ञासुओं के लिये उनका आज अत्यंत महत्व है। संशोधनात्मक प्रवृत्ति से किये हुए गीतों के अभ्यास से ही संगीत का छिपा हुआ इतिहास पुनर्गठित होना सुलभ हो जाएगा।

—संपादक

राग यमन, ताल एकताल (विलम्बित)

स्थायी

								प			मं पग शाऽ
प	–	–	,ध	नि(सां)	–	निध	प	ग	–	ध	प
हा	ऽ	ऽ	,जे	क ऽ	ऽ	र्म ऽ	ऽ	ब	ऽ	र्म	ने
३		४		×		०		२		०	

ग											
री	ग	री	सा	पग	प	–	गरी	प	ग	–	री
ग	ऽ	ऽ	र	दर	वे	ऽ	श ऽ	नि	ग	ऽ	ऽ
३		४		×		०		२		०	

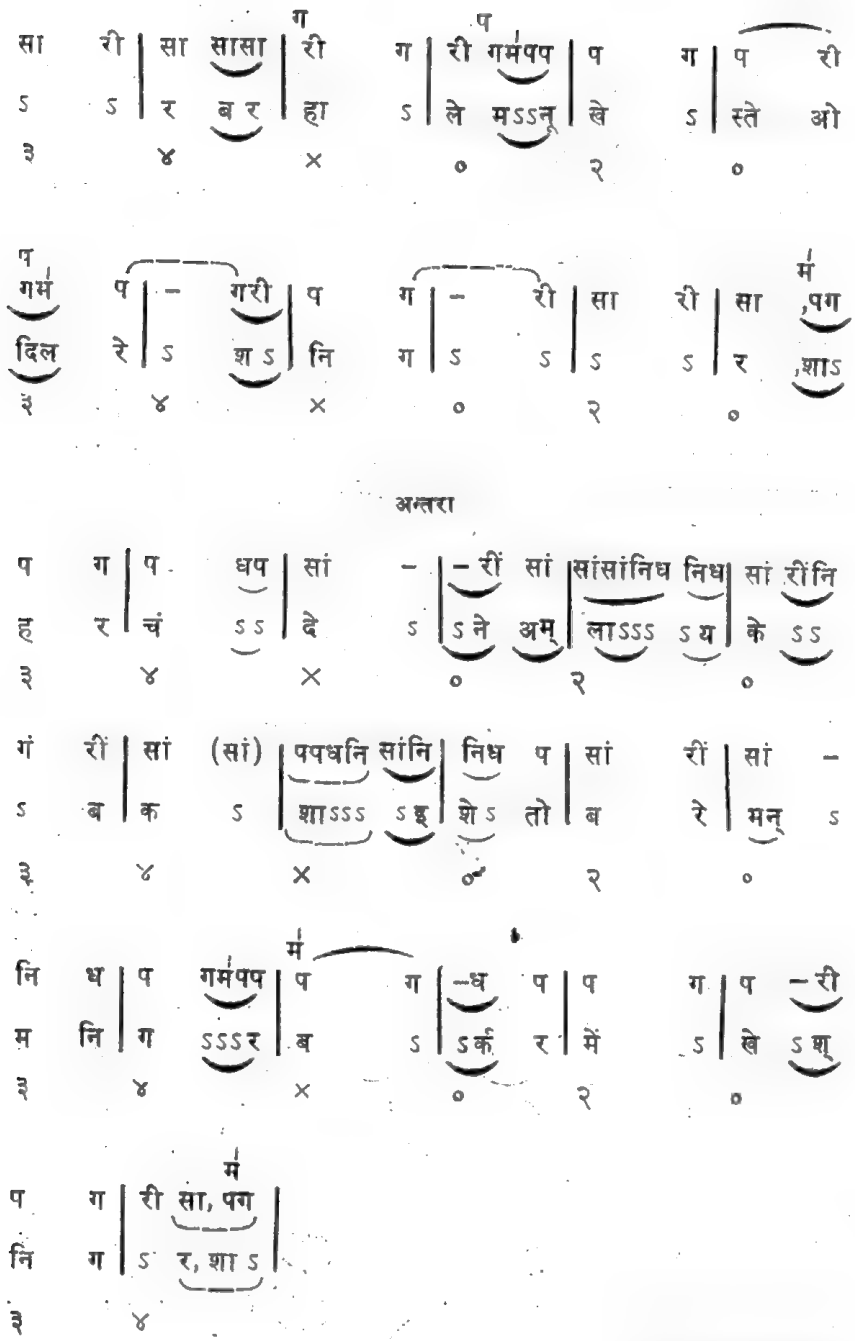

सा	री	सा	सासा	(ग)री	ग	री	(प)गमंपप	प	ग	प	री
ऽ	ऽ	र	बर	हा	ऽ	ले	मऽऽन्	खे	ऽ	स्ते	ओ
३		४		×		०		२		०	

(प)गमं	प	-	गरी	प	ग	-	री	सा	री	सा	(मं),पग
दिल	रे	ऽ	शऽ	नि	ग	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र	,शाऽ
३		४		×		०		२		०	

अन्तरा

प	ग	प	धप	सां	-	-रीं	सां	सांसांनिध	निध	सां	रींनि
ह	र	चं	ऽऽ	दे	ऽ	ऽने	अम्	लाऽऽऽ	ऽय	के	ऽऽ
३		४		×		०		२		०	

गं	रीं	सां	(सां)	पपधनि	सांनि	निध	प	सां	रीं	सां	-
ऽ	ब	क	ऽ	शाऽऽऽ	ऽइ	शेऽ	तो	ब	रे	मन्	ऽ
३		४		×		०		२		०	

नि	ध	प	गमंपप	(मं)प	ग	-ध	प	प	ग	प	-री
म	नि	ग	ऽऽऽर	ब	ऽ	ऽर्क	र	में	ऽ	खे	ऽश्
३		४		×		०		२		०	

प	ग	री	सा,(मं)पग
नि	ग	ऽ	र,शाऽ
३		४	

गायक—आशिक अली

मुखड़े का पाठभेद

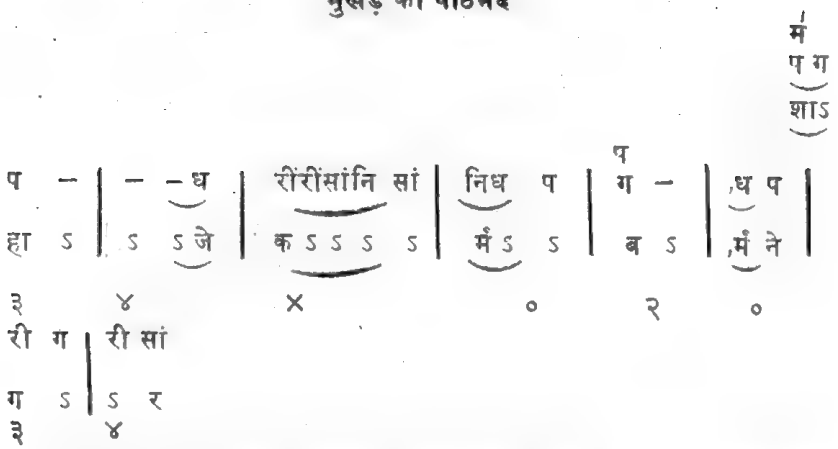

टिप्पणी—मेरे स्मरण के अनुसार आशिक अली ने शा ऽ। हा ऽ। ऽ जे ऐसा ही गाया था। मैंने दूसरों को ऊपर लिखे हुए पाठान्तरित मुखड़े के अनुसार अपनी सम रखते हुए सुना है। इसी प्रकार थोड़ी सावधानी से अंतरा भी ठीक किया जा सकता है।

सूचना—यमन राग में यही ख्याल 'शाहानामा' शीर्षक से ग्वालियर में झूमरा ताल में गाया जाता है। स्थायी की सम

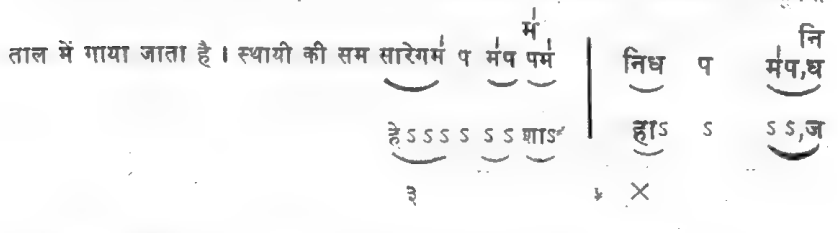

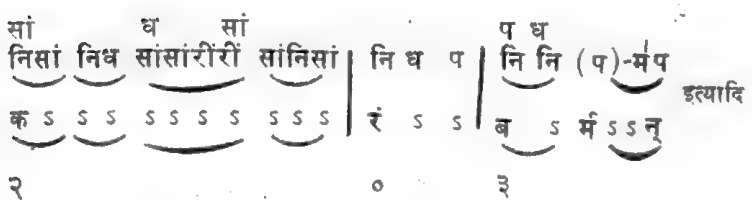

प्रकार से 'हा' अक्षर पर दी जाती है। शाहानामे की पंक्तियाँ स्व० राजाभैया पूछवाले से निम्नानुसार प्राप्त हुई थीं। "हे शाहा जकरं बर्मन् मनिगर दरवेश निगर बहाले मने ख्वाहिष्ता निगर ॥ हर्चन्द नेयं लायेक बक्शाई शे तो बर्मन् मनिगर बर्कमें अहे ख्वेष निगर ॥"

स्पष्टतः उपरोक्त दोनों पाठभेद त्रुटिपूर्ण हैं। स्वर लिपि के अभाव में ऐसे उत्कृष्ट गीत भी क्या से क्या हो जाते थे, इसका यह उत्तम उदाहरण है। सम्भवतः इन्हीं कारणों से पं० भातखण्डे जी ने ऐसे सैकड़ों परम्परागत गीतों का शुद्धीकरण किया था। उन पर जुगलबन्दियाँ बाँधीं अथवा उनके ऐसे प्राप्त स्वरूप में उन्हें सुशिक्षितों के हाथों में न देना श्रेयस्कर समझा।

—सम्पादक

राग मलुहा केदार, ताल तिलवाड़ा (विलम्बित)

स्थायी

								ध़				नि़			
री	सा	—	म़,मग़	प़	सा	—	—	प़	सा	—	—	सा	री	सा	—
कै	से	ऽ	उ,जिऽ	या	री	ऽ	ऽ	प्या	री	ऽ	ऽ	ला	ग	त	ऽ
३				×				२				०			

नि़	सा			ग				प							
सा	मग	प	—	प	(प)	—	ग	ग	म	प	ग	म	री	सा	ऽ
त	नऽ	भों	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
३				×				२				०			

नि़	सा			ग				प					री		
सा	मग	प	प	प	(प)	—	ग	ग	म	प	ग	म	री	नि़	सा
पि	याऽ	घ	र	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हीं	ऽ ॥
३				×				२				०			

अंतरा

म	म	म	म	प				नि़				नि़		नि़	
ग	ग	ग	ग	गमप	गम	री	सा	सा	धप़	सा	सा	सासा	सा	सारी	सा
म	न	रं	ग	पीऽऽ	ऽऽ	त	म	क	वन	दे	स	गव	न	कीऽ	नो
३				×				२				०			

नि़ सा	प	मं	
सा मग प —	ध प प मंपध	प मग मरी री	नि़ नि़ सा —
का हेऽ ना ऽ	प ठा ई पऽऽ	ती याऽ ऽऽ ऽ	री ऽ ऽऽ ॥
३	×	२	०

अथवा

नि़ सा सा —
ऽ ऽ री ऽ
०

अथवा

नि़ सा			ग री
सा मग प —	ध प — पग	मंपध पपग	म री नि़ सा
का हेऽ ना ऽ	प ठा ऽ ईऽ	पऽऽ तीयाऽ	ऽ ऽ ऽ री
३	×	२	०

गायक — आशिक अली

राग गुणकली, ताल त्रिताल (विलम्बित)

स्थायी

			मं
पप धनि सांरीं सांसां	सां — ध —	सां — ध प	प सां — सां
मोऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	हे ऽ ऽ ऽ	ले ऽ ऽ त	र स ऽ ब
०	३	×	२

			नि़ सा
ध — प प	पप धध पप पप	मम मम रीरी सा	सा ध़ — प़
ती ऽ य न	सोऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽ	सु घ ऽ र
०	३	×	२

	नि़ सा		
सा — री सा	सा प प ग	मरी सा री सा	मम रीम मरी सासा
ना ऽ ऽ र	सु र ज न	वाऽ प्या रे को	माऽ ऽऽ ऽऽ ऽन ॥
०	३	×	२

अन्तरा

				सां				मं	मं	मं					
प	प	–	प	ध	–	सां	सां	गं	गं	गं	रीं	पं	–	गं	गं
स	ज	ऽ	सि	गा	ऽ	ऽ	र	सु	ख	मा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न
०				३				×				२			

प				सां				ग				सां			
ग	प	सां	सां	ध	–	प	ग	प	ग	प	–	ध	सां	सां	सां
सा	ऽ	ऽ	ज	नी	ऽ	ऽ	ऽ	बे	ग	ऊ	ऽ	ठ	ऽ	च	ल
०				३				×				२			

गं सां

सां सां सां सां । रीं गं रीं सां (सां) । सां – ध प

ऽरींऽ	साऽ(सां)	धधमधप	ममम रीसा
तऽऽ	ऽऽऽ	ऽऽऽऽऽ	ऽऽऽऽन
२			

गायक—मुहम्मद अली

टिप्पणी—गीत का अंत बेतुका था, जिसे मैं ठीक-ठीक समझ न सका।

राग सूहा, ताल तिलवाड़ा (बिलम्बित)

स्थायी

प
नि̱
,आ

म म   प   प   नि̱   प   प प
प,मप ग̱ ग̱ म, म प | सां–नि̱सां नि̱ | म प मप ,मप | सां–नि̱सां ,नि̱ नि̱
ज,ऽऽ रे ऽ ऽ ,ब ऽ | धा ऽ ऽऽ वा | ऽ ऽऽऽ ,ब ऽ | ने ऽ ऽऽ ,ला ऽ
३   ×   २   ०

म म   म सा   नि̱   प   म
प, मप ग̱ ग̱ म नि̱प | सां ग̱म री सा | सां म म ,प | मपनि̱नि̱ पमपग̱ म ,नि̱
ड, ऽऽ ले ऽ के ऽऽ | ऽ घ ऽ ऽ र | गा ऽ वो ,मा | ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ ई ,आ
३   ×   २   ०

अन्तरा

प म   प   सां   प सां सां   सां   नि̱
म पप नि̱प ,नि̱नि̱ | सां सांसां रींनि̱सां सां | नि̱प ,नि̱ नि̱ सां–सां | रीं सां,सांरीं सांप नि̱प
बा ऽल के ऽ घ र | क्या ह र चोऽऽ है | अत ,सु ग ऽ ऽ ध | अं ग, मऽ लाऽ ऽयो
३   ×   २   ०

म म म   म   म म सा   नि̱   म
प ग̱ग̱म प,नि̱प सां | प,मप ग̱ग̱म री सा | साम म प प | मपनि̱नि̱पम पग̱म म नि̱
आ छेऽब ने,ऽऽ को | गै,ऽऽ येऽब जा ये | रीऽ झा इ ये | माऽऽऽऽऽ ऽऽऽ ई आ
३   ×   २   ०

टिप्पणी

प्रिय शंकरराव,

इसे तुम्हारे अनुमोदन के लिए भेज रहा हूँ। यह उस धमार पर आधारित है जिसके बारे में तुमने पिछले रविवार को संकेत किया था।

शुभ कामनाओं सहित—

V.N. Bhatkhande

सूचना—सम्भवतः यह गीत पं० भातखण्डे की रचना है। नवीन गीत रचना की दिशा में उनके प्रयत्नों की पृष्ठभूमि क्यों और कैसी बनती थी, इसका यह प्रत्यक्ष उदाहरण है।

—सम्पादक

राग शहाना, सरगम (त्रिताल)

स्थायी

नि॒ नि॒	ध	ध	
सा सा ध ध	। नि॒ प म प	। सां — नि॒ प	। म प ग॒ म
०	३	×	२

प			प म
नि॒ प ग॒ म	। रे रे सा —	। सा सा म म	। म प ग॒ म
०	३	×	२

ध		प	
नि॒ ध नि॒ प	। ध म प प	। सां — नि॒ प	। म प ग॒ म ॥
०	३	×	२

अन्तरा

प सां सां प
म प नि सां । — सां नि सां । नि सां रें सां । नि सां नि॒ प
० ३ × २

प प
नि॒ ध नि॒ प । ध म प प । सां — नि॒ प । म प ग॒ म
० ३ × २

प म प म
नि॒ प ग॒ म । रे रे सा — । सा सा म म । म प ग॒ म
० ३ × २

ध प
नि॒ ध नि॒ प । ध म प प । सां — नि॒ प । म प ग॒ म ॥
० ३ × २

राग जौनपुरी (सारंगांग तथा देसी अंग)—एकताल

स्थायी

सा री | रीग॒ सारी | प मरी | मरीमरी म | री सा | री सा
म ली | याऽ ऽऽ | झू ऽऽ | ऽऽऽऽ ऽ | म ऽ | र है
३ ४ × ० २ ०

प
नि़ सानि़ | री सा | अथवा नि़ सा | री सा | नि़ प | नि़ प | नि़ सा | — नि़ सा
नि मुऽ | वा ऽ | अथवा मो ऽ | रे ऽ | शो ऽ | ऽ ऽ | के ऽ | ऽ ऽऽ
३ ४ ३ ४ × ० २ ०

सा म म सा
सा री | री री | ग॒ ग॒ | म री | — सा | रीरीसानि़ सा
वा री | या ऽ | ई ऽ | ऽ ऽ | ऽ सो | ऽऽऽऽऽ ॥
३ ४ × ० २ ०

अन्तरा

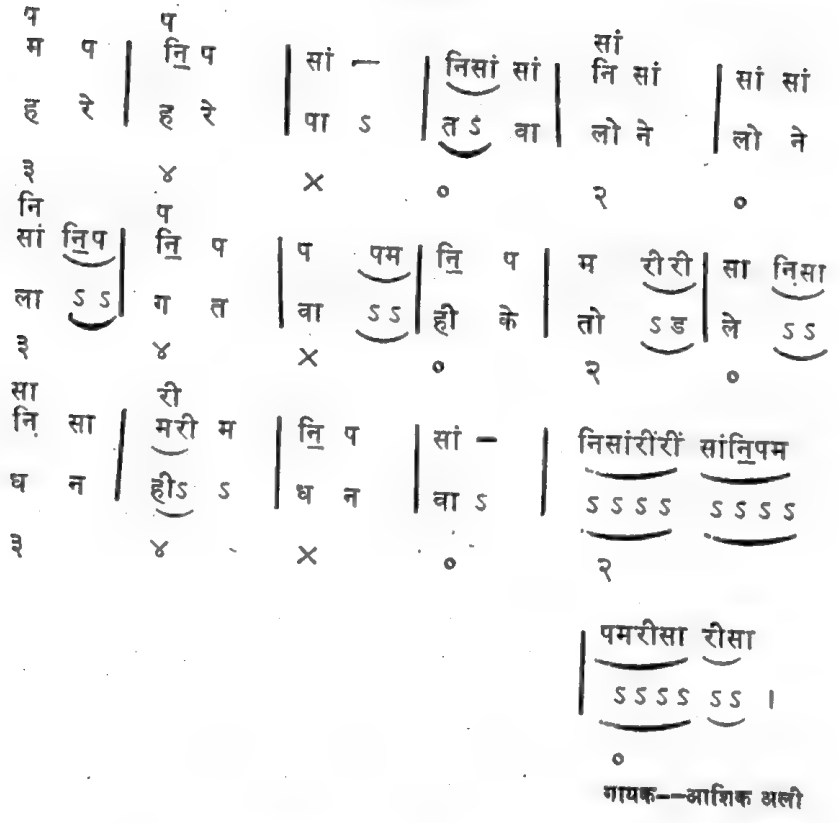

गायक—आशिक अली

राग जौनपुरी, ताल रूपक (मध्यलय)

स्थायी

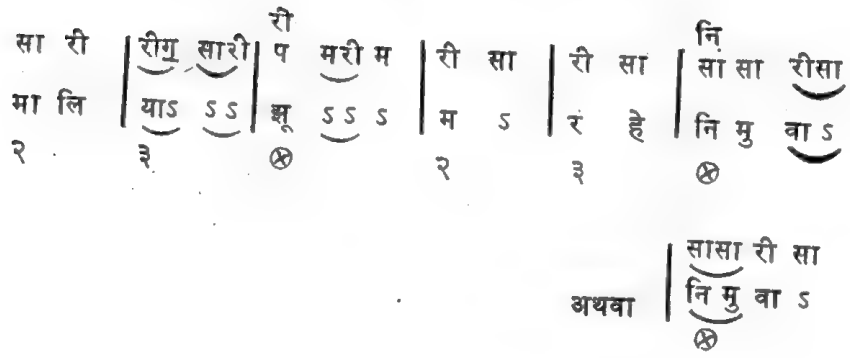

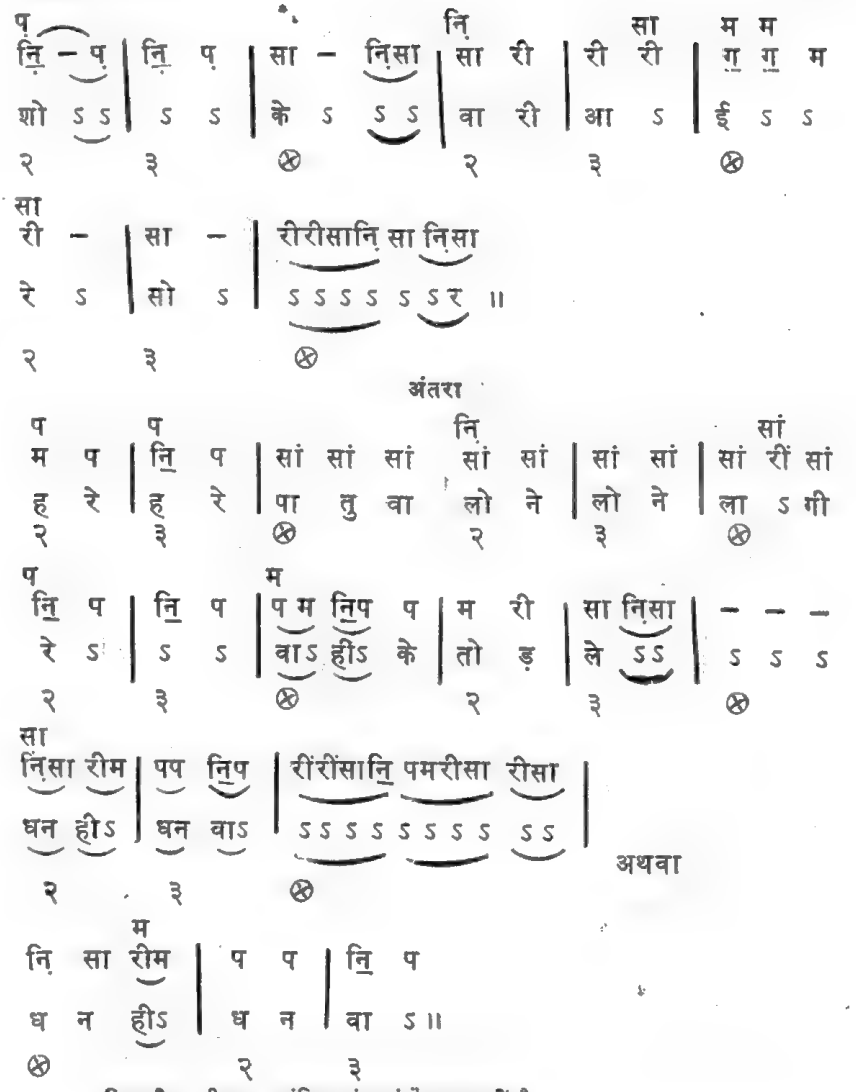

प नि़ – प़	नि़ प़	सा – नि़सा	नि़ सा री	सा री री	म म ग़ ग़ म
शो ऽऽ	ऽ ऽ	के ऽ ऽऽ	वा री	आ ऽ	ई ऽ ऽ
२	३	⊗	२	३	⊗

सा री –	सा –	रीरीसानि़ सा नि़सा
रे ऽ	सो ऽ	ऽऽऽऽ ऽ ऽर ॥
२	३	⊗

अंतरा

प प म प	प नि़ प	सां सां सां	नि़ सां सां	सां सां	सां सां रीं सां
ह रे	ह रे	पा तु वा	लो ने	लो ने	ला ऽ गी
२	३	⊗	२	३	⊗

प नि़ प	नि़ प	म पम नि़प प	म री	सा नि़सा	– – –
रे ऽ	ऽ ऽ	वाऽ हीऽ के	तो ड़	ले ऽऽ	ऽ ऽ ऽ
२	३	⊗	२	३	⊗

सा नि़सा रीम	पप नि़प	रीरींसानि़ पमरीसा रीसा
धन हीऽ	धन वाऽ	ऽऽऽऽ ऽऽऽऽ ऽऽ
२	३	⊗

अथवा

म नि़ सा रीम	प प	नि़ प
ध न हीऽ	ध न	वा ऽ ॥
⊗	२	३

टिप्पणी—गीत का अंतिम अंश संतोषप्रद नहीं है।

Bhatkhande

सूचना—'मलिया झूम रहे' जयपुरवाले श्री आशिक अली से प्राप्त जौनपुरी राग का यह गीत दो पाठ भेदों में दिया है। गीत का राग भी संदेहास्पद है। एक ही गायक के कण्ठ से दो पाठ भेदों का पाना मौखिक परम्परा की अनिश्चितता दर्शाती है। स्वरलिपि के अभाव में ऐसे परिवर्तन हो जाना स्वाभाविक ही तो था। —**सम्पादक**

राग मालकौंस, ताल त्रिताल (विलम्बित)

स्थायी

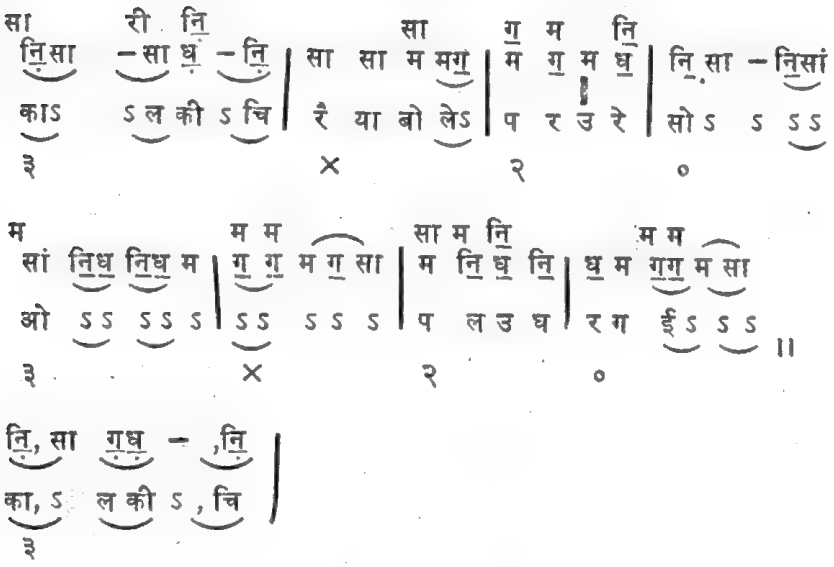

अन्तरा

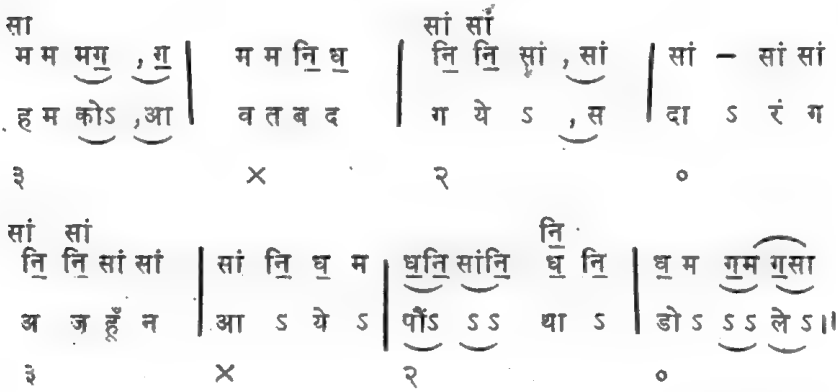

गायक—आशिक अली

राग तोड़ी, ताल तिलवाड़ा (विलम्बित)

स्थायी

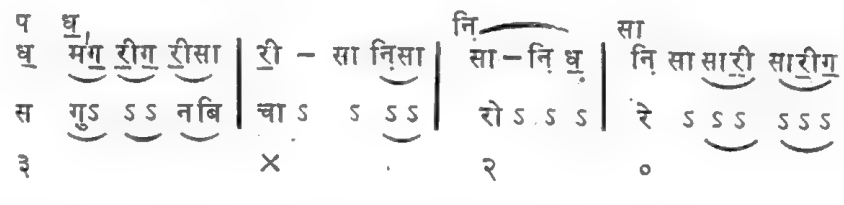

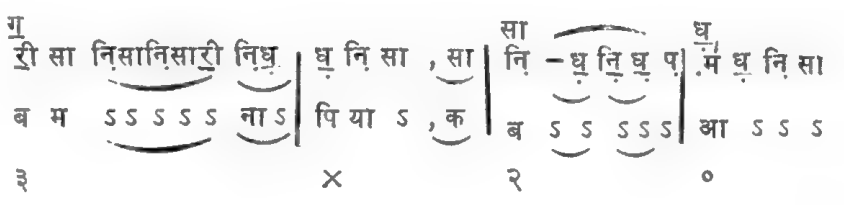

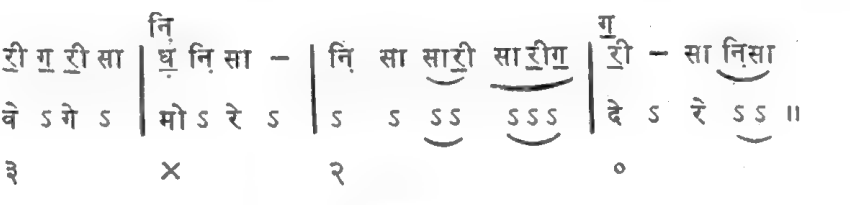

अंतरा

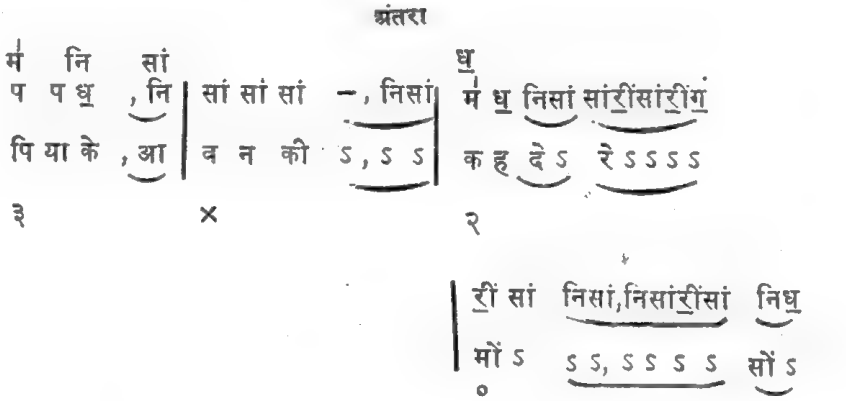

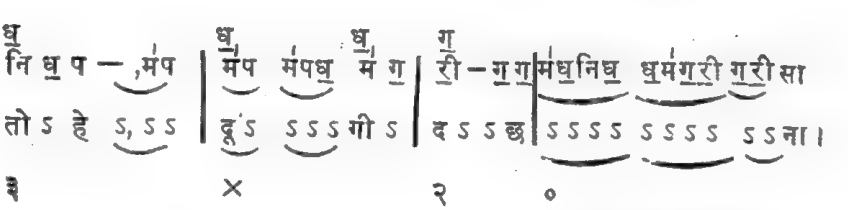

गायक—आशिक अली

गूजरी तोड़ी, ताल धीमा त्रिताल (न अधिक विलंबित न अति द्रुत)

स्थायी

ध ध	ध	ध	ध
म ग म ध	रीं सांनि सां निध	म ग ध –	म ग रीरी सा
ए रि मा ई	आ ऽऽ ऽ जब	धा ऽ वा ऽ	सा ऽ जन वा
३	×	२	०

अथवा

ध
म ग री सा
सा ऽ ज न
०

सा		म	ध ध
नि सारी नि ध	सा सा री गग	ग ग मरी ग	म धध मध मग
घ रऽ अ त	आ नं द सन	बा जि लोऽ ऽ	मो रे मं दिल राऽ
३	×	२	०

अन्तरा

नि ध म ग	म म ध –	म ध नि नि	सां – सां –
च तु र मा	ल नि यां ऽ	बि न बि न	ला ऽ ई ऽ
३	×	२	०

			सां
नि ध ध ध	नि सां सांरीं गं	रीं – सां सां	निसां निसांरीं नि ध
सु घ र मा	ल नि यांऽ ऽ	हा ऽ र गु	थाऽ ऽऽऽ ई ऽ
३	×	२	०

नि	रीं	नि	
ध गं रीं गं	नि सांरीं नि ध	ध नि – सांरीं	नि ध म ग
बे ऽ ला च	मे ऽऽ ली ऽ	के ऽ ऽ हर	वा ऽ ऽ ऽ ॥
३	×	२	०

गायक—हैदर खां, धार

सूचना—हिंदुस्तानी संगीत पद्धति भाग चौथा (सन् १६३२ की आवृत्ति) के पृष्ठ ६५२ पर पं० भातखण्डे ने इस गीत का उल्लेख किया है। इस प्रसंग पर पाठकों के लिए वह गीत स्वर लिपि सहित उपलब्ध हो रहा है। हैदर खां द्वारा लिखाई हुई अंतरे की अंतिम पंक्ति त्रुटि पूर्ण प्रतीत होती है। एक ही गीतखण्ड में 'हार' शब्द का दो बार आ जाना ठीक नहीं है। 'बेला चमेली के हरवा' के स्थान पर 'बेला चमेली केवरा' शब्द सयुक्तिक है। शुद्धिकरण के लिए पं० भातखण्डे अपनी कलम केवल ऐसे ही स्थानों पर चलाते थे। परिवर्तित पंक्ति ऐसी हो जावेगी —

(नि) धु नि — सांरीं	नि धु मं गु
के ऽ ऽ ऽव	रा ऽ ऽ ऽ
२	०

—सम्पादक

राग गूजरी तोड़ी, ताल त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी

सा (गु)रि रि सा	(रि)गु (रि)गु रि सा	नि़ — (सा)सा रि	नि़ — ध — (नि़ स)
म झ म न	गो ऽ र ख	धौं ऽ ऽ ऽ	धा ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
(ध़)मं ध़ — नि़	सा — सा सा	सारि सारिग रि सा	(सा)नि़ सारि नि़ ध़
ज़ मी ऽ आ	का ऽ स प	रऽ ऽऽऽ दो उ	क ड़ीऽ या ऽ
०	३	×	२
रि — धु धु	मं गु गु गु	मं रि गु —	रि — सा सा
पाँ ऽ च प	ची ऽ स प्र	बौं ऽ ऽ ऽ	धो ऽ ऽ, स ॥
०	३	×	२

अंतरा

(ध)मं गु मं धु	सां — सां सां	(नि)धु नि सां रीं	निसां निसांरीं नि धु
जा ऽ दि न	ते ऽ उ र	झो ऽ सु र	झोऽ ऽऽऽ न हिं
०	३	×	२
(सां)नि धु मं गु	रि गु रि सा	(धु)नि (धु)नि धु मं	गु — रीं, सा
या ऽ झ ग	रे ऽ स न	मैं ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ धा, स ॥
०	३	×	२

गायक—मुहम्मद अली

राग कालिंगड़ा, ताल झपताल (दोनों मध्यम)

स्थायी

पम॑ – ध॒	नि सां	नि – ध॒	प –
हऽ ऽ री	आ ऽ	लाऽ व	ना ऽ
३	×	२	०
पम॑ – ध॒	नि सां	नि ध॒ प	म॑प –
वऽ ऽ न	पू ऽ	र ऽ न	चंऽ ऽ
३	×	२	०
गम – ग	री॒ सा	म ग म	प ध॒
ऽऽ ऽ द्र	मि स	स दा हु	से न
३	×	२	०
नि सां रीं॒रीं॒	सां नि	ध॒नि सां नि	ध॒ प
जै ऽ नुल	आ व	दीन ऽ के	नं द ॥
३	×	२	०

अंतरा

ध॒ –	पम॑ – ध॒	नि सां	सां सां –
दी ऽ	नऽ ऽ के	का ऽ	र न ऽ
×	२	०	३
नि ध॒	नि सां –	रीं॒ सां	रीं॒सां – –
इं द्र	व रु ऽ	नी ऽ	ऽऽ ऽ ऽ
×	२	०	३
रीं॒ गं	गं – रीं॒	सां नि	ध॒ सां रीं॒
वा ऽ	मैं ऽ ल	छु टि	वा ऽ स
×	२	०	३
सां नि	ध॒ सां नि	ध॒ प	
चा रो	ज ग सु	गं ध ॥	
×	२	०	

सूचना—कालिंगड़े के साथ परज के संयोग का संकेत पं० भातखण्डे ने किया है। परंतु वह प्रयोग दोनों मध्यमों सहित किया जाय, ऐसा उनका मन्तव्य नहीं था। अर्थात् ऐसे गीत लक्ष्यप्रधान न होने के कारण प्रकाशित न किये होंगे। —सम्पादक

राग बहार, (सा री ग म प ध नि) ताल झपताल

स्थायी

					म	म		नि	नि
सा	म	—	पनिम	प	ग	ग	म	ध	ध
आ	ऽ	ऽ	यो	ऽ	है	ऽ	ब	सं	ऽ।
२			०		३			×	
नि									
ध	नि	सां	—	सां	ध	नि	सां	रीं	रीं
त	ब	औ	ऽ	र	बा	ऽ	ऽ	ग	न।
२			०		३			×	
सां	नि	सां	सां	—	नि	सां	रीं	सां	रीं
ब	सी	ऽ	है	ऽ	धू	ऽ	म	बे	ऽ।
२			०		३			×	
						सां			
नि	सां	—	ध	ध	नि	नि	सांनि	प	म
लि	न	ऽ	प	ग	पुं	ऽ	ज	अ	रु।
२			०		३			×	
			म	म					
नि	म	प	ग	ग	म	पम	प	म	री
पी	ऽ	रु	द	र	शा	ऽऽ	न	है	ऽ।
२			०		३			×	

अंतरा

निध	निध	नि	सां	नि	सां	—	सां	सां	सां
गुं	ऽ	ज	ऽ	र	हे	ऽ	भं	व	र।
×		२			०		३		
नि	सां	सां	नि	सां	सां	—	सां	नि	सां
ड	व	र	ड	व	र	ऽ	फू	ऽ	ले।
×		२			०		३		

मं ग॒ं	—	मं	पंमं	पं	मं ग॒ं	मं ग॒ं	मं	रीं	सां
फ़	ऽ	ल	न	में	फ	लि	त	ऽ	स ।
×		२			०		३		
रीं	—	सां	सां	सां	नि	सां नि	सांनि	ध॒	नि॒
मी	ऽ	र	म	सु	गं	ऽ	ध	स	र ।
×		२			०		३		
म	नि	ध	नि	सां	ध॒	—	नि॒	—	सां
सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	न
×		२				०	३		
रीं	सां								
है	ऽ ।								
×									

सूचना—बहार राग में कोमल धैवत का प्रयोग लक्ष्यप्रधान तो था ही नहीं, वरन् छात्रों तथा सुशिक्षितों के लिये भ्रमपूर्ण भी हो जाता ।

—सम्पादक

पण्डित भातखण्डे द्वारा

रचित अप्राप्य गीत

राग	क्रमांक	आद्याक्षर	ताल	प्राप्तिस्थान
यमन	१	हे मन गाय प्रभू को भाई	त्रिताल	गीतमालिका भा० २, पृ०सं० १८
भूपाली	२	धर चतुर सुघर गुरु चरना	त्रिताल	,, ,, ३, ,, ३
हमीर	३	हमें समझावो चतरवा हमीर	त्रिताल	,, ,, ६, ,, १४
	४	शंभो महादेव	झपताल	,, ,, १, ,, १४
केदार	५	पदारथ आद कहे संगीत	त्रिताल	,, ,, २१, ,, ६
	६	छिन लव काष्टा	त्रिताल	श्री० ना रातांजनकर
	७	धीरोदात्त ललित	सूलताल	गीतमालिका भा० ४, पृ० सं० १३
	८	गावत नाम प्रभुको	मल्लताल	१३ मात्रा, श्री० ना० रातांजनकर
कामोद	९	रेरेपप मपधधप कामोद की जान	झपताल	गीतमालिका भा० ९, पृ०सं० १७
छायानट	१०	सूच्छम सुर साथ गावे	चौताल	श्री० ना० रातांजनकर
मालश्री	११	मेल कल्याण ओड़व राग	रूपक	गीतमालिका भा० १०, पृ०सं० २१
हिंडोल	१२	एमन सुर मिलाय	सूलताल	,, ,, ४, ,, २४
अलैया बि०	१३	गुनि गाय अष्टभेद	चौताल	,, ,, १७, ,, १४
नवरोचिका	१४	नवरोचिका रूप बखाने	तीव्रा	इन्साइक्लोपीडिया १, पृ०सं० ४२
सरपरदा	१५	जब से सजन परदेस सिधारे	त्रिताल	गीतमालिका भा० ३, पृ०सं० १३
देवगिरी बि०	१६	जब सिरिधर मुख	त्रिताल	,, ,, १, ,, ७
देसकार	१७	साधत सुर सूंदर	सूलताल	बालाभाऊ उमड़ेकर
बिहाग	१८	राग बिहाग चतुर गुनि गावत	त्रिताल	गीतमालिका भा० ११, पृ०सं० ४
	१९	तीव्रा कुमुदवती मन्दा	त्रिताल	श्री० ना० रातांजनकर
	२०	द्रुत द्वय विरम	चंद्रक्रीड़ा ९ मात्रा,	बालाभाऊ उमड़ेकर
	२१	जय जगपाला रे	जगपाल ११ मात्रा,	बालाभाऊ उमड़ेकर
मांड	२२	नंदलाल जी छो गालो ठाड़ो	दादरा	एम० के० सामन्त
	२३	दीन बन्धु दीननाथ	दादरा	एम० के० सामन्त
	२४	प्रभु मेरी करनी पर मत जैयो	त्रिताल	एम० के० सामन्त
देस	२५	जा रे जा जा रे पतंगवा	चित्रताल	१५ मात्रा, श्री० ना० रातांजनकर

तिलककामोद	२६ ताल मणि गाय सुजन	मणितात	११ मात्रा, श्री० ना० रातांजनकर
सोरठ	२७ रघुवर तेरोहि दास कहाऊँ	त्रिताल	गीतमालिका भा० ३, पृ०सं० ४
नागस्वरावली	२८ पधसा गमगसा गमप गम गसा	त्रिताल	श्री० ना० रातांजनकर
भैरव	२९ तीवर तरतीवर तीवरतम	सूलताल	गीतमालिका भा० २, पृ०सं०१४
	३० भैरव विभास परभात गुनकरि	गवरि झपताल	,, ,, १६, ,, ४
	३१ दीन दयाल कृपाल	त्रिताल	,, ,, १७, ,, ३
अहीर भैरव	३२ कर जोर मोर	चौताल	इन्साइक्ल प डिया १, पृ० सं० ६१
श्री	३३ वादी समवादी अनुवादी के भेद	चौताल	गीतमालिका भा० १०, पृ०सं० १२
	३४ तमोगुण राजसगुण सत्वगुण	सूलताल	,, ,, २, ,, १९
परज	३५मोरे मन कर नाम सुमरन	फरोदस्त	१३ मात्रा, श्री० ना० रातांजनकर
	३६ नाचत गजलीला	गजलीला	१७ मात्रा, श्री० ना० रातांजनकर
	३७ काहे मदन इतनो श्रम	एकताल	गीतमालिका भा० २, पृ०सं० ७
मालिगौरा	३८ कर याद चतुर तूं आज	त्रिताल	श्री० ना० रातांजनकर
बि० सारंग	३९ बिलसत बिन्द्रावनी अधग	झपताल	गीतमालिका भा० ६, पृ०सं० १०
	४० जय जय सारंगपाणें	मुकुन्दताल	२० मात्रा, श्री० ना० रातांजनकर
लंका० सा०	४१ रट हर प्रिया को नाम	झपताल	इन्साइक्लोपीडिया १, पृ०सं० १३२
हंस-किंकिणी	४२ नये नये सिंगार सखी	झपताल	श्री० ना० रातांजनकर
नीलांबरी	४३ चतुर गुनिवर राग बरनत	तीव्रा	बालाभाऊ उमड़ेकर
दरबारी	४४ राग अलाप चतुर गुनि माने	झूमरा	श्री० ना० रातांजनकर
चंद्रकौंस	४५ चंद्रकौंस के गुन गाय	त्रिताल	बालाभाऊ उमड़ेकर
देव गांधार	४६ गावत मिल गांधार	सूलताल	इन्साइक्लोपीडिया १, पृ०सं० १५३
आभीरी	४७ संग लिये अभीर गन	झपताल	,, १, ,, १५४
कौंसी	४८ हे जगदीश चतुर मुरार	तीव्रा	,, १, ,, १६१
मालकौंस	४९ मूल क्रम आद लिखत	चौताल	गीतमालिका भा० ५, पृ० सं० २१
	५० हर को हर हर में पछाना	त्रिताल	श्री० ना० रातांजनकर
भैरवी	५१ कौन सौतन में बिरमाय	यतिशेखर	३० मात्रा, श्री० ना० रातांजनकर
	५२ गावत सरस ताल	सारस ताल	१८ मात्रा, गी० भा० ६, पृ०सं०३
तोड़ी	५३ जाय शरन तुं मुकौंदा मोरे मन	त्रिताल	,, ,, ६, ,, १९
	५४ गिरिधर चरन कमल	त्रिताल	,, ,, ६, ,, २१
	५५ नाहक पीतड़ि तोड़ी हमते	त्रिताल	,, ,, ६, ,, २३
बहादुरीतोड़ी	५६ अनुद्रुत द्रुत बिराम	सूलताल	इन्साइक्लोपीडिया १, पृ० सं० १७४

उपरोक्त सभी बंदिशोंका नोटेशन - भातखंडे स्मृति ग्रंथ में पृष्ठ १८६ से २४८ में उपलब्ध है।

इस पुस्तक में आये हुए ताल-लक्षण गीतों के लिए उपयुक्त ठेके

चन्द्रक्रीड़ा-मात्रा ९

मात्रा—	१	२	३	४	५	६	७	८	९
ठेका —	धिं	त्रक	धी	ना	त्रक	धा	धी	धी	ना	तबला
ताल —	×		२		३	४			

जगपाल-मात्रा ११

मात्रा—	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	
ठेका —	धा	ति	ट	धा	ऽ	क	त्ता	तिट	कत	गदि	गिन	मृदंग
ताल —	×					२		३		४		

ठेका — धा ऽक धी धी ना । त्रक धी । ना धी । धी ना । तबला

ताल — × २ ३ ४

मणिताल-मात्रा ११

मात्रा—	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	
ठेका —	धा	धिन	नक	धेत	धेत	धिन	नक	तिट	कत	गदि	गिन	मृदंग
ताल —	×			२		३			४			

ठेका — धीं ऽ त्रक । धी ना । तिं ऽ ना । धी धी ना । तबला

ताल — × २ ३ ४

मल्लताल-मात्रा १३

मात्रा—	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	
ठेका —	धिं	धिं	धागे	त्रक	धिं	ऽ	धा	त्रक	तू	ना	कत्	ऽत्ता	त्रक	तबला
ताल —	×				२				३		४		५	

फरोदस्त-मात्रा १३

मात्रा—	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	
ठेका —	धिं	त्रक	धी	ना	तू	ना	क	त्ता	त्रक	धी	ऽक	धी	ना	तबला
ताल —	×		२		३		४			५				

चित्रताल-मात्रा १५

मात्रा—	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
ठेका —	धा	धिट	धा	दि	त्ता	धा	धे	धे	त्ता	तिट	कत	गदि	गिन	धा	कत्
ताल —	×		२			३				४				०	मृदंग

ठेका — धी ना । धी धी ना । तू ना क त्ता । त्रक धी ना धी । धी ना । तबला

ताल — × २ ३ ४ ०

गजलीला-मात्रा १७

मात्रा—१ २ ३ ४ | ५ ६ ७ ८ | ९ १० ११ १२ |
ठेका —धा धी ट्ट धा | क द्धी ट्ट धा | तिट कत गदि गिन |
ताल —× २ ३

१३ १४ १५ १६ १७ |
धा तिट कत गदि गिन |
४ मृदंग

ठेका —धा धिं धिं धा । तूक धिं धिं धा । तू ना क त्ता ।
ताल —× २ ३

त्रक धिं धागे नधा त्रक । तबला
४

सारस ताल-मात्रा १८

मात्रा —१ २ ३ ४ | ५ ६ | ७ ८ | ९ १० | ११ १२ १३ १४ |
ठेका —धा धी ट्ट धा | तिट धा | क द्धा | तिट धा | क द्धी ट्ट धा |
ताल —× २ ३ ४ ५

१५ १६ १७ १८ |
तिट कत गदि गिन | मृदंग

मुकुन्दताल-मात्रा २०

मात्रा —१ २ ३ ४ | ५ ६ | ७ ८ | ९ १० ११ १२ |
ठेका —धा धी ट्ट धा | क द्धा | तिट धा | क द्धी ट्ट धा |
ताल —× २ ३ ४

मात्रा —१३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० |
ठेका —तिट धा दिं ता तिट कत गदि गिन | मृदंग
५

यतिशेखरताल-मात्रा ३०

मात्रा —	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
ठेका —	धी	ऽक	धी	ना	धी	धी	ना	धी	धी	ना	तू	ना	क	त्ता
ताल —	×		२				३				४		५	

मात्रा —	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
ठेका —	त्रक	धीं	धीं	ना	धागे	त्रक	तू	ना	धि	त्रक	धी	धी
ताल —	६				७		८		९			

मात्रा —	२७	२८	२९	३०	
ठेका —	ना	धी	धी	ना	तबला
	१०				

—'सुजान'

रचित गीत

पंडित विष्णु नारायण भातखण्डे द्वारा रचित इन कतिपय गीतों को 'अप्राप्य' इसलिए कहा गया है कि इन गीतों को बाद में हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति ग्रंथमाला के क्रमिक भागों में अथवा राजा नवाबअली साहब के मारिफुन्नगमात में स्थान नहीं दिया गया था। इनमें से बहुत से गीत सन् १९१६ से लेकर १९२१ तक प्रकाशित गीतमालिका के सत्रह भागों में प्रसिद्ध हो चुके हैं। गीतमालिका की यह प्रतियाँ आज तो केवल देखने के लिए भी दुर्लभ हो गयी हैं। अखबार के सस्ते कागज पर छपे हुए इन छोटे-छोटे भागों में १५ से २० तक संगृहीत अथवा रचित गीतों की स्वरलिपि बड़े टाइप में, मात्र चार आना मूल्य पर उस समय बेची गईं। ऐसा लगता है, परम्परागत गीत सस्ते दामों पर अधिक संख्या में उपलब्ध करा देने के पं० भातखण्डे के अभियान का यह एक अंश है। इस प्रसंग पर पाठकों की सेवा में इन अप्राप्य गीतों को उपलब्ध कराया जा रहा है। शेष गीतों के प्राप्ति-स्थान का उल्लेख गीत के अंत में किया है। ताल-लक्षण-गीतों की अप्रचलित तालों के ठेके डॉ० श्री० ना० रातांजनकर ने विशेष अनुरोध पर जिज्ञासुओं के लिए तैयार किये हैं।

—सम्पादक